# काव्य - प्रयोजन

★ **भूमिका** :- मानव - जीवन के सभी क्रिया - कलाप उद्देश्यपूर्ण होते हैं। संस्कृत की यह लोकोक्ति इसी तथ्य को प्रमाणित करती है - "प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते" अर्थात बिना प्रयोजन के मन्दबुद्धि (मूर्ख) भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होते। साहित्यकार अपनी सृजन क्षमता के कारण ब्रह्मा के समान माना गया है, फिर उसका कार्य प्रयोजनविहीन कैसे हो सकता है? प्रयोजन के विषय में इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि साहित्यकार क्यों लिखता है? साहित्य-सृजन में साहित्यकार के जो भी उद्देश्य रहते हैं, वे ही साहित्य अथवा काव्य के प्रयोजन कहलाते हैं। इन प्रयोजनों की चर्चा विभिन्न

SHIVA A+ Designer

Serial No. NOTES Date

विद्वानों ने अनेक प्रकार से की है। यहाँ उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है:-

**संस्कृत आचार्यों द्वारा बताये गये प्रयोजन** :- विभिन्न संस्कृत के आचार्य ने काव्य-प्रयोजन का वर्णन किया है, किन्तु उनके जो निम्नलिखित हैं अनुसार है:-

1. **भामह** :- अलंकारवादी भामह के अनुसार :-

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति प्रीतिं कीर्तिं च साधुकाव्य निबन्धनम्॥

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष की प्राप्ति काव्य का प्रयोजन है। साथ ही कलाओं में कुशलता, कीर्ति और प्रीति भी इसके प्रयोजन हैं, जिससे कवि रचना करके अपने यश को संसार में अमर रखना चाहता है।

2. **दण्डी** :- आचार्य दण्डी ने प्रयोजन की चर्चा नहीं की है, परन्तु उन्होंने शब्द के महत्व की चर्चा ज्ञान का प्रकाश देने वाला तथा यश को स्थायित्व प्रदान करने वाला कहकर की है। इस आधार पर साहित्य का प्रयोजन ज्ञान और यश की प्राप्ति स्वीकार किया जा सकता है-

SHIVA A+ Designer Sheets

इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥

3. **रुद्रट** :- 'काव्यालंकार' में रुद्रट ने काव्य के प्रयोजनों की चर्चा की है। उनके अनुसार- युगान्त तक रहने वाला यश, स्तुत्यादि द्वारा धन-प्राप्ति, विपत्ति-नाश, आनन्द-प्राप्ति, आप्तकामना और पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति ही काव्य का प्रयोजन है।

4. **राजशेखर** :- ये भी काव्य के प्रयोजनों की चर्चा कवि और सामाजिक दोनों दृष्टियों के आधार पर करते हैं- सामाजिक (सहृदय) की दृष्टि से काव्य का प्रयोजन आनन्द की प्राप्ति है और कवि की दृष्टि से अक्षय कीर्ति।

5. **मम्मट** :- भारतीय काव्यशास्त्र में इस दृष्टि से मम्मट की सर्वाधिक मान्यता है। 'काव्यप्रकाश' में उन्होंने काव्य-प्रयोजन का इस प्रकार उल्लेख किया है- "सकल प्रयोजन-मौलिभूतं समनन्तरमेव रसास्वादन-समुद्भूतं विगलित वेद्यान्तरमानन्दम्।"

अर्थात् वह प्रयोजन जो संसार के सभी प्रयोजनों में मुख्य है, जो प्राप्त होते ही

SHIVA A+ Designer Sheets

तुरन्त रस का स्वाद चखाकर आनन्द अनुभव कराता है। इस आनन्द के सामने शेष ज्ञेय वस्तुओं का ज्ञान तिरोहित हो जाता है। यह प्रयोजन स्रष्टा और सहृदय दोनों के हित है।

इसके अतिरिक्त मम्मट ने 6 प्रयोजनों की चर्चा की है, जो सर्वाधिक मान्य हुए हैं -

यश- प्राप्ति, धन- प्राप्ति, व्यवहार-कुशलता, अनिष्ट-निवारण, आनन्द और कान्ता -सम्मत उपदेश।

★ **हिंदी आचार्यों द्वारा गये प्रयोजन** :- हिंदी आचार्यों द्वारा किये गये प्रयोजन निम्नलिखित है :-

1. **कुलपति** :- इनके प्रयोजन सम्बन्धी लक्षण मम्मट के आधार पर ही है :

जस, सम्पति, आनन्द अति, दुरितनि डारै खोइ।
होत कवित्त तैं चतुरई, जगत बाम बस होइ।।

2. **भिखारीदास** :- ये अर्थ, यश और आनन्द को महत्व देते हैं। ये कवियों के जीवन की स्थिति प्रस्तुत करते हुए कहते हैं :-

एक लहैं तप पुंजन के फल, ज्यों तुलसी अरु सूर गुसाईं।
एक लहैं बहु सम्पति केशव, भूषन ज्यों बर बीर बड़ाई।।

SHIVA A+ Designer Sheets

NOTES

Date

**देव** :- ये यश को महत्व प्रदान करते हैं :
"ऊँच - नीच अरु कर्मबस, चलौ जात संसार।
रहत भव्य भगवंत जस, नव्य काव्य सुखसार॥"

**तुलसीदास** :- यद्यपि तुलसी काव्यशास्त्र परम्परा में नहीं गिने जाते, फिर भी उन्होंने 'रामचरितमानस' का आरम्भ करते समय अपने ग्रंथ का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए 'स्वान्तः सुखाय' की चर्चा की है और उसे 'लोकहित' के लिए समर्पित माना है।

**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** :- प्रायः सुनने में आता है कि कविता का उद्देश्य मनोरंजन है, परन्तु कविता का अन्तिम लक्ष्य जगत् के मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण, उनके साथ मनुष्य - हृदय का सामंजस्य - स्थापन है।

**डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी** :- मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता और परमुखापेक्षिता से बचा न सके, जो उसकी आत्मा को तेजोद्दीप्त न कर सके, जो उसके हृदय को परदुःखकातर और

SHIVA A+ Designer Sheets

संवेदशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।

**डॉ० रामधारी सिंह दिनकर** :- इनके अनुसार भी काव्य का प्रयोजन आत्माभिव्यक्ति ही है - "मैं यह मानता हूँ कि वसन्त का गुलाब और कवि का स्वप्न अपने मन में पूर्ण होता है, वह किसी को कुछ सिखाने के लिए नहीं होता।"

★ **पाश्चात्य आचार्यों द्वारा बताये गये प्रयोजन** :- पाश्चात्य आचार्यों द्वारा बताये गये प्रयोजन निम्नलिखित अनुसार है :-

1. **अरस्तू** :- ये काव्य का प्रयोजन 'आनन्द' को स्वीकार करते हुए उसे समाजोन्मुखी बनाने के पक्षधर है :- "The pleasure it affords is affords in an enduring pleasure, an aesthetic employment which is not divorced ~~f~~ fo from Scenic ends"

SHIVA A+ Designer

2. होरेस :- ये आनन्द और लोक-कल्याण को ही साहित्य का प्रयोजन स्वीकार करते हैं :- "The poet's aim is to Profit or to Please, or to please, or to blend in the delightful and the useful".

3. मैथ्यू आर्नोल्ड :- ये जीवन की व्याख्या करना ही साहित्य का प्रयोजन स्वीकार करते हैं - The end and aim of all literature is, if one considers it attentively, nothing but a criticism of life."

4. ड्राइडन :- ये स्वान्तः सुखाय और परजनहिताय के पक्षधर हैं - "To teach delightful is the function of Poetry."

5. जे. ई. स्पिनगार्न :- ये कला, कला के लिए के पक्षधर थे - "Romantic Criticism first enunciated the principle that art has no aim except expression, that its aim is complete when expression is complete.

SHIVA A+ Designer Sheets

NOTES

Date

## लोकमंगल और साहित्य-प्रयोजन :- लोकमंगल से तात्पर्य लोक-कल्याण से ही है। साहित्यकार रचना क्यों करता है? इस पर अनेक विद्वानों के विचारों की चर्चा हो चुकी है, जिनमें दो बातें मुख्य रूप से सामने आयी हैं- पहली :- स्वान्तः सुखाय या आनन्द की प्राप्ति तथा दूसरी :- जनहित की भावना। मम्मट द्वारा गिनाये गये प्रयोजनों में से 'व्यवहार-ज्ञान', 'शिवेतर-क्षति' और 'कान्तासम्मित उपदेश' सीधे लोकमंगल से सम्बद्ध रखते हैं, जिन्हें जिनकी चर्चा पीछे की जा चुकी है। इसके साथ ही कुछ विद्वान् 'उद्बोधन' को भी साहित्य का प्रयोजन स्वीकार करते हैं, पर यह प्रयोजन ऊपर गिनाये गये प्रयोजनों- व्यवहार ज्ञान और कान्तासम्मित उपदेश के अन्तर्गत समाविष्ट हो जाता है।

यह बात तो सर्वमान्य है कि कलाकार सेवा का उद्देश्य लेकर नहीं लिखता। यदि वह इस उद्देश्य को सामने रखकर लिखेगा तो कृति उत्कृष्ट कलाकृति नहीं बन सकेगी। वह युगानुरूप स्थिति से प्रभावित होकर

SHIVA A+ Designer

Serial No. NOTES Date

जो भी लिखता है, उससे मानव-कल्याण स्वतः हो जाता है। ~~यही~~ ~~उन्होंने~~ टॉलस्टॉय ने 'What is Art?' में कला का उद्देश्य 'मानव-कल्याण' ही स्वीकार किया है।

**निष्कर्ष** :- उपर्युक्त आचार्यों के मत का अध्ययन करते हुए हम कह सकते हैं काव्य की रचना किंचित उद्देश्य को ध्यान में रखकर की जाती है। काव्य द्वारा कवि जीवन का परिष्कार करता है। कदाचित ~~इसलिए~~ इसीलिए हिंदी आलोचना ने भी लोकमंगल एवं जनपक्षधरता को साहित्य का वांछित प्रयोजन स्वीकार किया है।